राम की वापसी

राम की वापसी

बाहर ठंड थी. शीत ऋतु की ठंडी हवा चल रही थी. भीतर घर गर्म और आरामदायक था. जया और उसकी माँ दीपों के त्यौहार, दीपावली, की तैयारी कर रही थीं.

“पिता जी घर कब आयेंगे?” जया ने पूछा.

“बच्ची, तुम्हें धैर्य रखना चाहिए,” उसकी माँ ने कहा, “अयोध्या के लोगों के समान. क्या तुम जानती हो कि अयोध्या के निवासियों ने राम के लौटने की प्रतीक्षा कितने वर्ष की थी?”

“कितने वर्ष?”

“चौदह वर्ष.”

“यह तो बहुत समय है.”

“तो, जब तक हम प्रतीक्षा कर रहे हैं, मैं तुम्हें यह कहानी सुनाती हूँ.....”

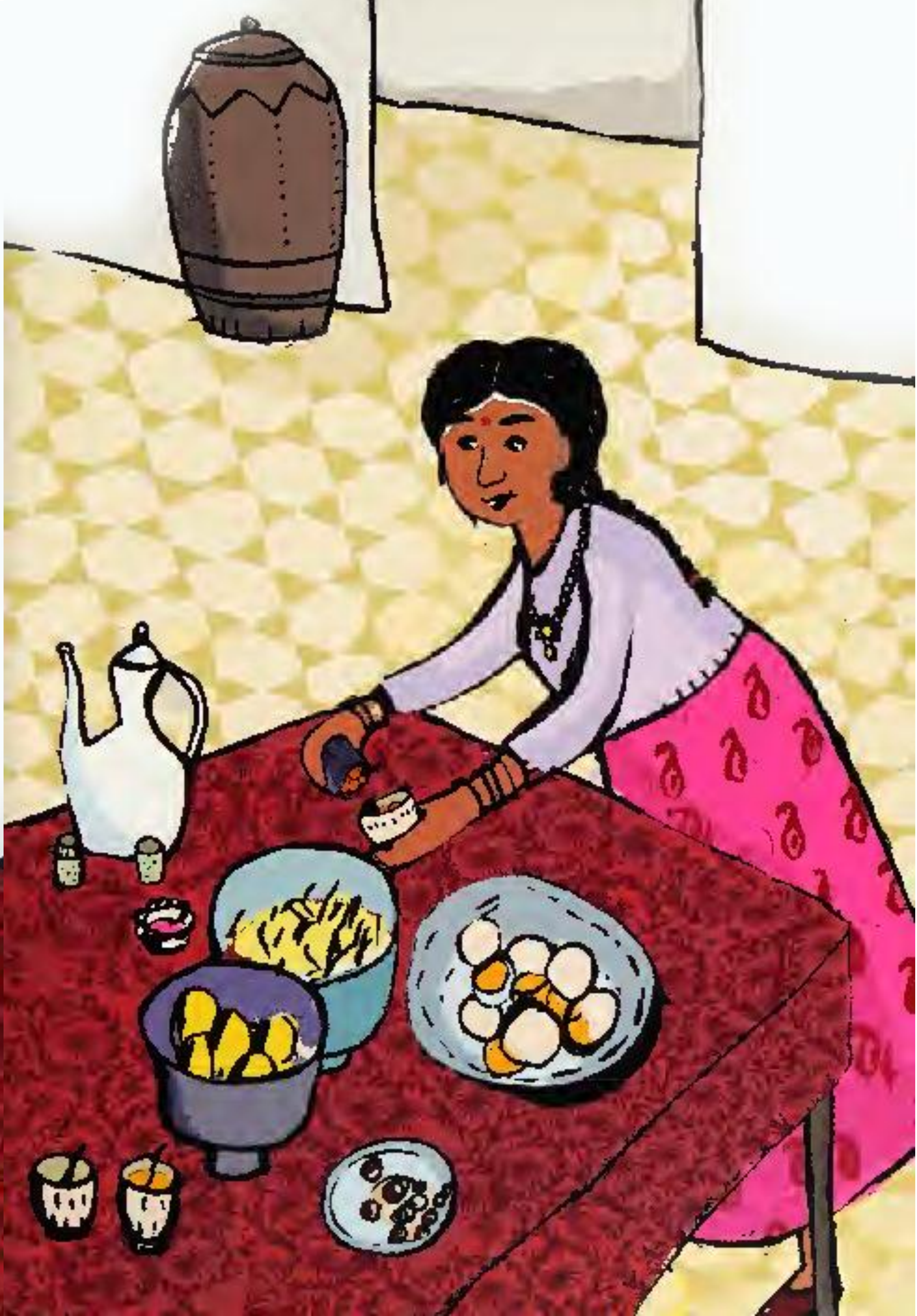

.....राम की दुष्ट, सौतेली माँ ने राजकुमार राम और उनकी सुंदर पत्नी सीता को वन में रहने के लिए भेज दिया था.

दस सिर वाले असुर रावण ने जब सीता को देखा तो उसे ईर्षा हुई. वह सीता को अपनी पत्नी बनाना चाहता था.

तो उसने एक स्वर्ण मृग वन में भेजा.

“वह कितना सुंदर है,” सीता ने कहा.

“मैं उसे तुम्हारे लिए पकड़ कर लाऊँगा,” राम ने कहा. वह मृग के पीछे दौड़े और सीता को पीछे अकेली छोड़ गए.

रावण अपनी दुष्ट हँसी हँसा. उसने सीता को पकड़ लिया और उठा कर अपने जादुई रथ में बैठा दिया और आकाश में उड़ता हुआ चल दिया.

“बेचारी सीता,” जया ने कहा. “क्या वह भयभीत थी?”

“वह अवश्य भयभीत थी,” जया की माँ ने कहा. “लेकिन वह निडर थी और चतुर भी.”

“क्यों, उसने क्या किया?”

“रंगोली बनाते-बनाते मैं तुम्हें बताऊँगी.”

जया और उसकी माँ ने प्रवेश द्वार के सामने चमकदार रंगों से रंगोली बनाई.

“देवताओं का घर में स्वागत करने के लिए रंगोली बनाई जाती है,” माँ ने बताया.

“और पिता जी का.”

जया ने रंगोली पर कुछ और रंग छिड़क दिये. “यह बहुत सुंदर है,” उसने कहा, “आपके कंठहार समान.”

“सीता के पास भी एक कंठहार था,” माँ ने कहा, “तुम जानती हो कि उसने उस का क्या किया?”

....सीता सोच रही थी कि वह कैसे राम को जानकारी दे कि वह कहाँ थी. फिर उसके मन में एक विचार आया. जब रावण का कोई भी सिर उसे देख न रहा था, उसने अपने आभूषण उतार लिए. एक-एक कर उसने उन्हें रथ से नीचे गिरा दिया.

“शायद इनके सहारे राम मुझे तक पहुँच जायें,” उसने सोचा.

सीता की खोज में राम वन में भागते रहे. फिर उनकी भेंट विशालकाय हनुमान से हुई.

"हनुमान," राम ने पूछा, "क्या तुम ने सीता को कहीं देखा?"

"नहीं, मैंने नहीं देखा. लेकिन देखिये, आज आकाश से हीरों की वर्षा हो रही है!"

"वह तो सीता की अँगूठियाँ हैं," आकाश की और देखते हुए राम ने कहा. "वह इसी पथ से गई होगी."

"सीता को ढूँढने में मैं आपकी सहायता करूँगा," हनुमान ने कहा.

“मुझे हनुमान अच्छे लगते हैं,” जया ने कहा.

“वह राम के प्रिय मित्र थे,” उसकी माँ ने कहा. “हम सब को हनुमान जैसा बनने का प्रयास करना चाहिए और दूसरों का मदद करनी चाहिए.”

“हनुमान ने क्या किया?”

....सीता द्वारा गिराये हुए गहनों का पीछा करते-करते, हनुमान और वानरों की एक सेना के साथ, राम समुद्र तट तक पहुँच गए. समुद्र के पार बहुत दूर लंका थी, जहाँ रावण का राज्य था. राम ने समुद्र को देखा.

"कोई मनुष्य इस समुद्र को पार नहीं कर सकता," उन्होंने कहा. "यह बहुत बड़ा है. अब मैं सीता को कैसे ढूँढ पाऊँगा?"

"मैं वहाँ जाऊँगा और सीता को ढूँढ निकालूँगा," हनुमान ने वचन दिया. उन्होंने समुद्र के ऊपर बहुत बड़ी छलांग लगाई.

शीघ्र ही उन्होंने सीता को ढूँढ लिया. "चिंता न करें," उन्होंने सीता से कहा. "राम आपको मुक्त कराने के लिए आ रहे हैं."

“ओह, राम जल्दी करो,” जया ने कहा.

“हमें भी जल्दी करनी चाहिए,” उसकी माँ ने कहा.

“नव-वर्ष शुरु करने के लिए हमें नये कपड़े पहनने चाहिए. चलो आओ.”

“क्या दीपावली का समय हो गया है?” जया ने पूछा.

“लगभग हो गया है,” उसकी माँ ने कहा.

“लेकिन पिता जी अभी तक नहीं आए.”

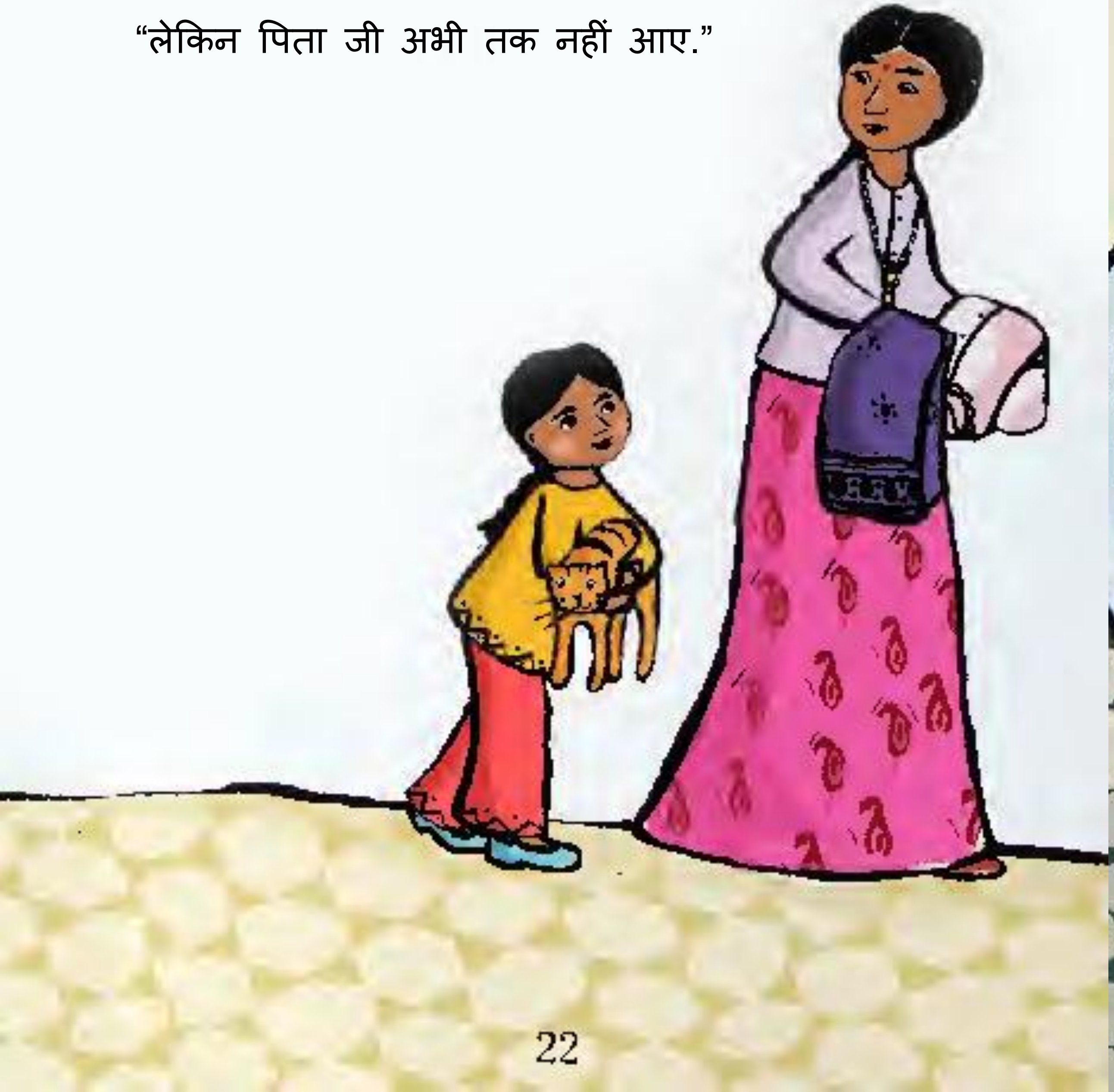

जया की माँ ने वर्षा को देखा और एक गहरी सांस ली, “हमें प्रार्थना करनी चाहिए कि जिस प्रकार ईश्वर ने राम का ध्यान रखा था वैसे ही तुम्हारे पिता का ध्यान रखें....”

....राम अभी भी समुद्र की ओर देख रहे थे. “मैं समुद्र के उस पार कैसे जाऊँगा?” वह सोच रहे थे.

तभी वरुन देव समुद्र से बाहर प्रकट हुए. “रावण बहुत दुष्ट है,” वरुन देव ने कहा. “मैं आपकी सहायता करूँगा.”

राम ने उनका अभिवादन किया और पूछा. “हमें क्या करना चाहिए?”

“वानरों से कहें कि वह पानी में पत्थर गिरायें.”

वानर समुद्र में पत्थर फेंकने लगे. वरुन देव पत्थरों को पानी में डूबने न देते. पत्थर तैरने लगे.

शीघ्र ही समुद्र के ऊपर एक मज़बूत पुल बन गया. यह जानकर रावण क्रोधित हो गया.

“फिर क्या हुआ?” जया ने पूछा. “क्या उनमें युद्ध हुआ?”

माँ ने सिर हिलाया. “एक भयंकर युद्ध हुआ.”

“ओह, मुझे आशा है कि राम जीत गये होंगे,” जया ने कहा.

……राम और वानर सेना ने कई दिनों तक रावण और उसके असुरों के साथ युद्ध किया. असुर बहुत भयंकर थे. फिर राम को रावण दिखाई दिया. उन्होंने सूर्य के प्रकाश और अग्नि से बना एक बाण रावण को मारा.

बाण रावण को लगा और वह धरती पर जा गिरा.

युद्ध समाप्त हो गया.

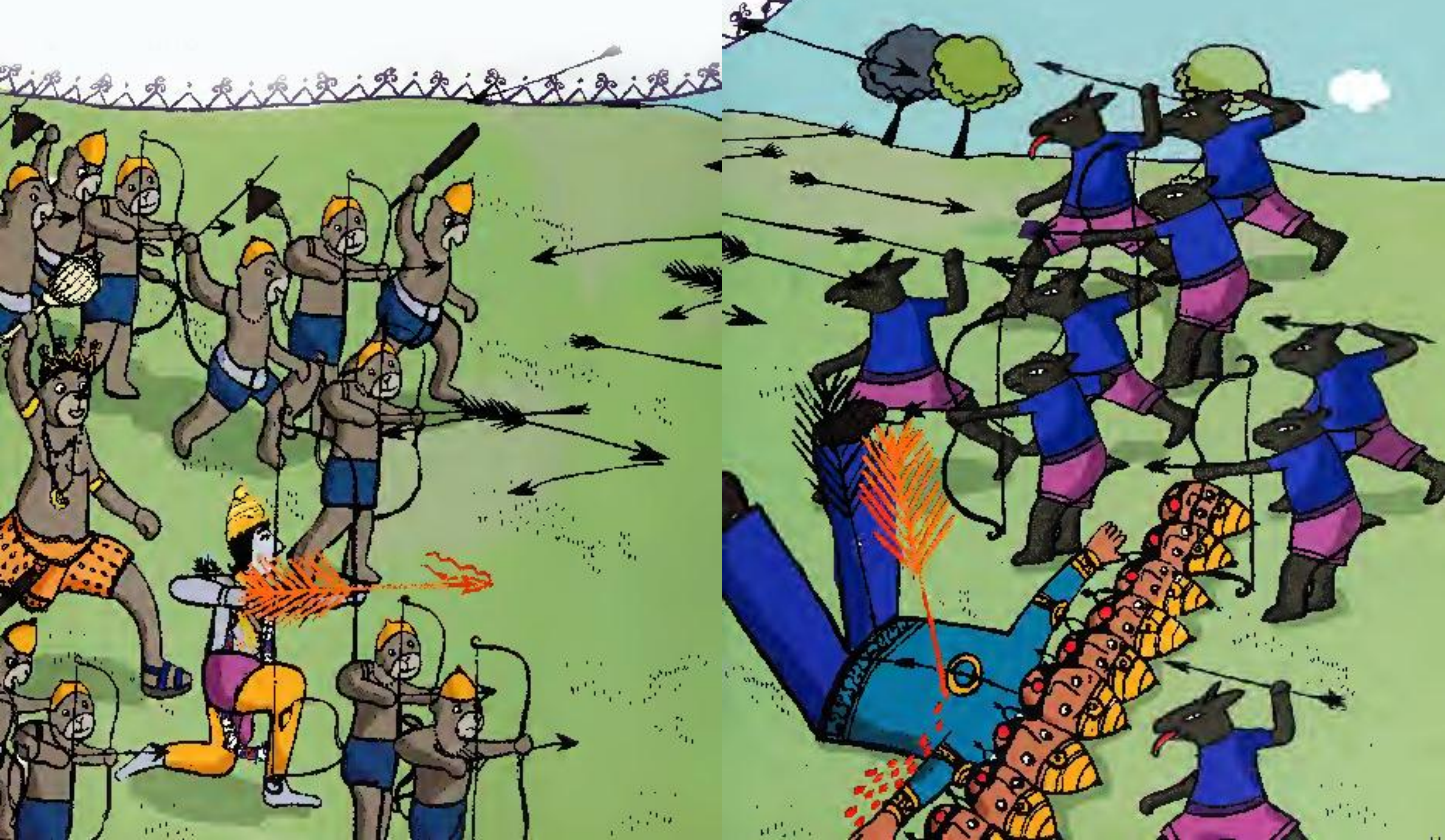

राम और सीता ने वानरों का धन्यवाद किया. वह जादुई रथ पर सवार होकर अयोध्या लौट आये.

“काश पिता जी भी लौट आते,” जया ने कहा. बाहर तेज़ हवा चल रही थी और वर्षा की बौछार खिड़कियों से टकरा रही थी. “अब तो अँधेरा भी हो गया है.”

“चलो दीपक जलायें,” उसकी माँ ने कहा. “वह अंधेरे को दूर भगा देंगे.”

जया ने कई नन्हे दीपक उठाये. एक-एक कर उसने दीपक माँ को दिये. वह उन्हें जलाती गई और खिड़की की चौखट पर रखती गई.

जया ने दीपकों के झिलमिलाते प्रकाश को देखा. “क्या दीपक रास्ता ढूँढने में पिता जी की सहायता करेंगे?” उसने पूछा.

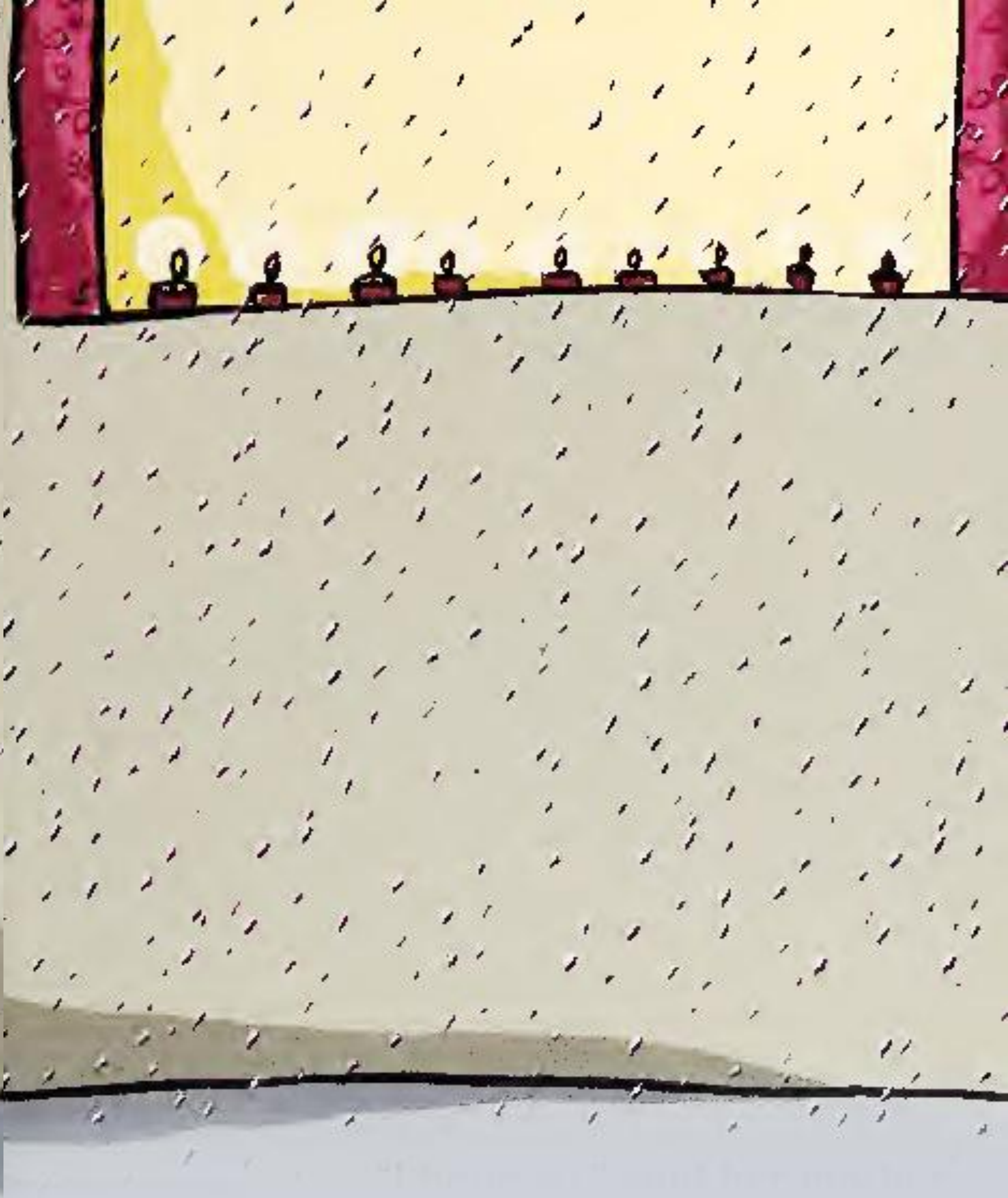

“मुझे पूरी आशा है,” माँ ने कहा. “अयोध्या के लोगों ने भी यही किया था....”

....राम और सीता को घर का रास्ता बताने के लिए लोगों ने दीपक जलाये और जलती हुई मशालें लहराईं.

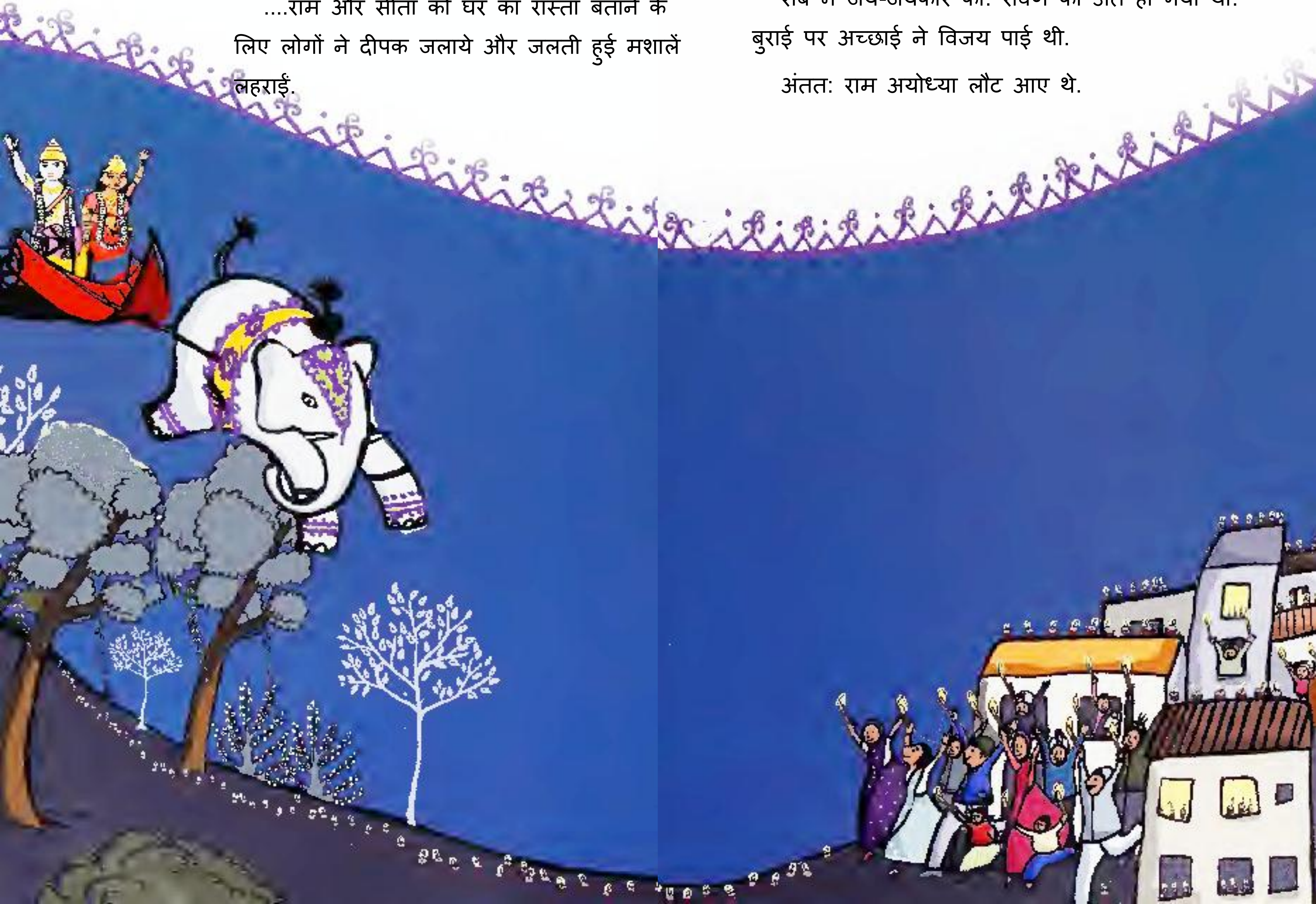

सब ने जय-जयकार की. रावण का अंत हो गया था. बुराई पर अच्छाई ने विजय पाई थी.

अंततः राम अयोध्या लौट आए थे.

"..... और देखो," माँ ने मुस्कराते हुए कहा, "कोई और भी घर लौट आया है."

"पिता जी!" जया प्रसन्नता से चिल्लाई. "आप आ गए!"

जया के पिता जी दीपकों से जगमगाते घर के अंदर आए. "गाड़ी खराब हो गई थी," उन्होंने कहा. "मुझे लगा था कि मैं सारी रात वहीं फंसा रहूँगा, लेकिन किसी ने रुक कर मेरी सहायता की."

"वैसे ही जैसे हनुमान ने राम की सहायता की थी," जया बोली.

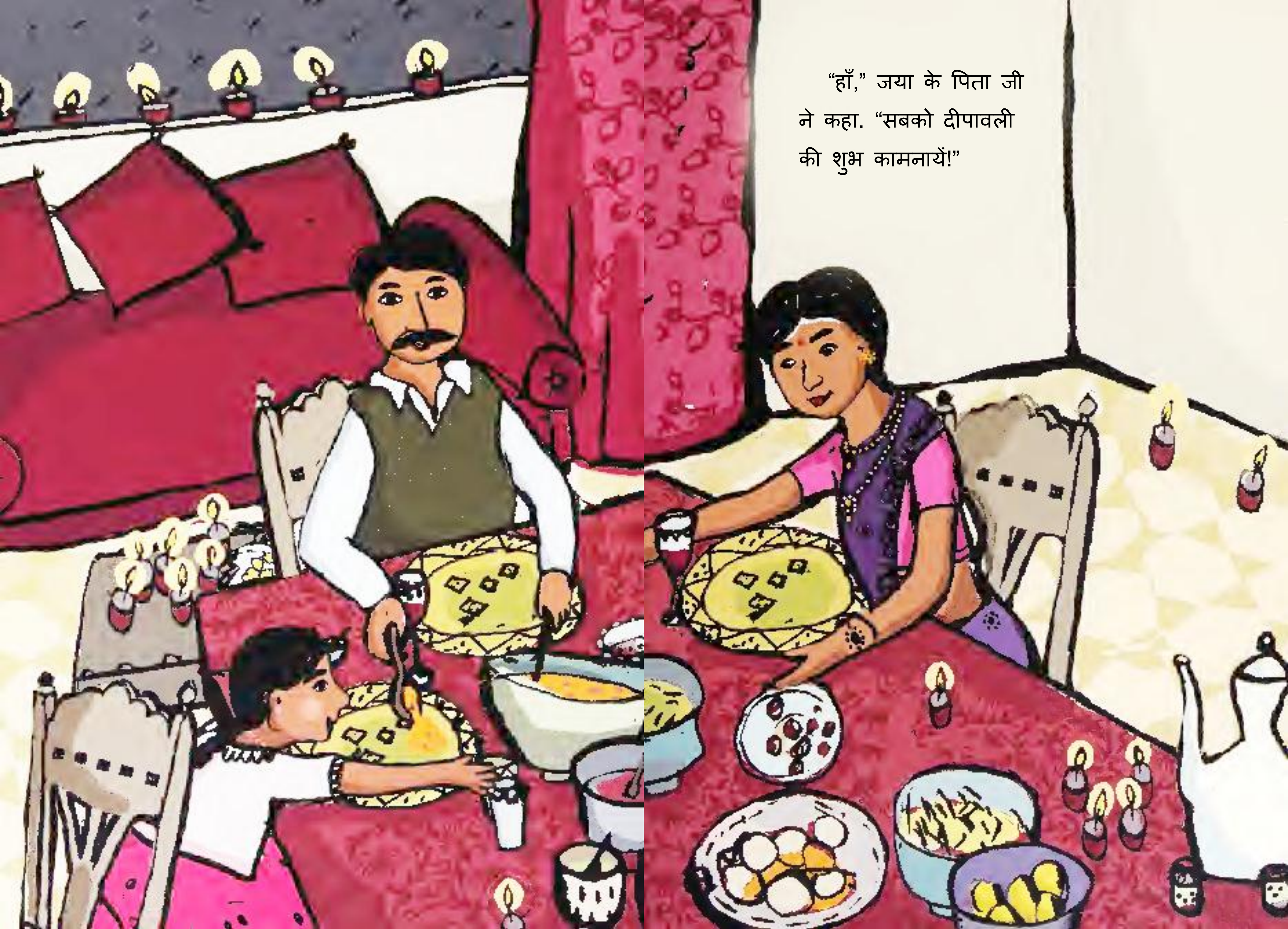

“हाँ,” जया के पिता जी ने कहा. “सबको दीपावली की शुभ कामनायें!”

हिंदू दीपावली को त्योहार मनाते हैं. उस दिन नव वर्ष आरंभ होता है. लोग घरों को सजाते हैं और दीपक जलाते हैं. अपने मित्रों और संबंधियों को उपहार देते हैं. जया की तरह तुम भी दीपक बना सकते हो.

मिट्टी के नन्हे दीपक जला कर खिड़कियों में रखे जाते हैं और देवतों की अनुकंपा के लिए प्रार्थना की जाती है.

सामान: मिट्टी, पानी, रंग, ब्रुश, मोमबती.

अपने मेहमानों का स्वागत करने के लिए हिन्दू लोग रंगोली के नमूनों को रंगीन पाउडर और चावल से बनाते हैं.

मुट्ठी भर मिट्टी को गीला कर सान लो और उसका एक गोला बना लो. पानी लगा कर मिट्टी को गीला रखो

अगूंठे से दबाकर मिट्टी के गोले में एक सुराख बना लो. सुराख को बड़ा कर ऊपर तस्वीर में बनी आकृति जैसा बना लो

निचले भाग को दबा कर समतल कर लो. अपने दीपक को सूखने दो

यहाँ दिये गए पैटर्न के अनुसार रंगोली बनाओ या अपने किसी पैटर्न के अनुसार

जब रंग सूख जायें तो तुम्हारा दीपक तैयार है. उसके अंदर एक मोमवबी रखो और किसी व्यस्क के सहायता से उसे जलाओ.

तुम चाहो तो दिए को अंदर और बाहर दोनों ओर से रंग सकते हो.

मित्रों और संबंधियों को भेजने के लिए अपने दीपावली कार्ड बनाओ.

सामान: पतले कार्ड का एक शीट, कलर-पैंसिलें

कार्ड को बीच से मोड़ लो.

कार्ड के एक तरफ अपना एक हाथ रखो और उसके अनुसार कार्ड पर लाइन बनाओ.

हाथ की आकृति के बीच में रंग करो और पैटर्न बनाओ.
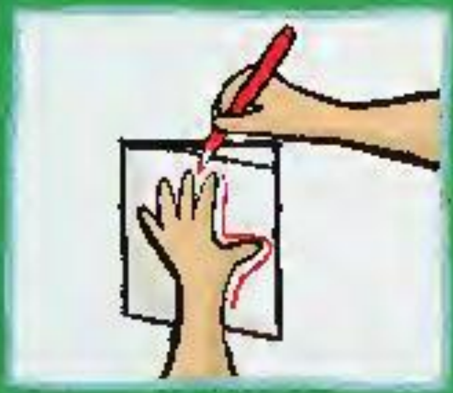
कार्ड के अंदर 'दीपावली की हार्दिक शुभ कामनायें' लिखो.